IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

Sufi Sant: Sadaramji ka Jeevan Darshan

Dilip Kumar
Research Scholar, Department of History, Jai Narayan Vyas University, Jodhpur, India

सारांश -

सूफी शब्द की उत्पति के सम्बन्ध में विद्वानों में गंभीर मतभेद है। प्रायः यह शब्द अरबी भाषा के **'सफा'** शब्द से बना माना जाता है। एक अन्य विचार के अनुसार सफा का अर्थ निष्कपट भाव है। अतः सभी के प्रति निष्कपट तथा निस्पृह भाव रखने वाले व्यक्ति को सूफी कहते है। सूफी मत में भक्त को **'मुरीद'** कहते है तथा पीर एवं मुरीद दोनों का मानसिक तादात्म्य अनिवार्य है। इस स्थिति को **'तवज्जुह'** कहा जाता है। यहां पर सूफी सम्प्रदाय के रोहल पंथ एवं शेख फरीद पंथ का अत्यधिक प्रभाव रहा है, जिसमें सदारामजी साहेब विख्यात सन्त हुए हैं

सादुल की अरजी सुनो, दाता दीनदयाल ।
ग्रह्यो जो चरण गुरु आपको, पावो प्रेम पियाल।।

Copyright to IJIRSET DOI:10.15680/IJIRSET.2017. 0612129 230016

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सदाराम जी ने अनेक दोहे, सवैयों, छन्दों एवं भजनों की रचना की, जो कि '**सादुल–साहित्य**' के नाम से सूफी साहित्य की अमूल्य थाती है। इसका एक दोहा द्रष्टव्य है–

ऐसा अवरण अवलिया, पाय न ऐसा पीर।
सिद्ध न ऐसा सूरमा, सादुल सुख की सीर।।
सगुण रूप धर सन्त को, निरगुण नामन रूप।
आये जीव उधारणे, अनहद ब्रह्म अरूप ।।

सदाराम जी ने अपनी योग साधना तथा दिव्य ज्ञान से सम्पूर्ण सिन्ध, राजस्थान के साथ–साथ, गुजरात, महाराष्ट्र, छतीसगढ राज्यों में प्रसिद्धि पाई।

मुख्य शब्द - तवज्जुह, सफा, जियारत, कनाअत, ईसार, मुजाहदा, जिक्र, मराक, पीर, मुरीद

वैराग्ययुक्त साधना द्वारा अल्लाह की उपासना को श्रेयस्कर मानने वाले सन्त **'सूफी'** कहलाते थे।[1] सूफी मत अथवा तसव्वुक इन्हीं सन्तों की देन है। यह एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक परम्परा है तथा इसका इतिहास इस्लाम के इतिहास सदृश पुरातन एवं जीवन्त है।

सूफी शब्द की उत्पति के सम्बन्ध में विद्वानों में गंभीर मतभेद है। प्रायः यह शब्द अरबी भाषा के **'सफा'** शब्द से बना माना जाता है।[2] 'सफा' का तात्पर्य पवित्र अथवा

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

विशुद्ध है। इस प्रकार सूफी ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो मन, वचन एवं कर्म से पवित्र हो।[3]

एक अन्य विचार के अनुसार सफा का अर्थ निष्कपट भाव है। अतः सभी के प्रति निष्कपट तथा निस्पृह भाव रखने वाले व्यक्ति को सूफी कहते है।[4] एक अन्य सर्व प्रचलित मतानुसार सूफी शब्द अरबी भाषा के **'सूफ'** से बना है।[5]

'सूफ' ऊन के लिए प्रयुक्त होता है। ऊन से निर्मित सादा सस्ता वस्त्र सूफियों का प्रतीक बन गया और उन्हें सादगी, पवित्रता, निर्धनता व त्याग का पर्याय माना गया।[6] सूफी विरक्त, भौतिक वाद से परे, शक्ति तथा सत्ता से दूर ऐसे साधक होते है जो कनाअत (सन्तोष), ईसार (बलिदान) तथा इश्क (प्रेम) को महत्व देते है।[7]

दैनिक क्रियाओं में सूफी उपासना में नमाज, तिलावत, अवराध के अतिरिक्त मुजाहदा (आत्म निग्रह), जिक्र (ईश्वर स्मरण) तथा मराक (ध्यान) उल्लेखनीय है।[8]

साधना के लिए पीर (मुर्शीद) की आवश्यकता होती है। सूफी मत में भक्त को **'मुरीद'** कहते है तथा पीर एवं मुरीद दोनों का मानसिक तादात्म्य अनिवार्य है। इस स्थिति को **'तवज्जुह'** कहा जाता है।[9]

सूफी सन्त सहिष्णुता तथा सह अस्तित्व पर विश्वास करते थे तथा सदैव विरक्त भाव से सभी के कल्याण और भलाई की कामना करते थे। ये अत्यन्त विनम्र एवं सन्तोषी

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

प्रवृति के साथ–साथ आम आदमी के पक्षपाती व समर्थक होते थे। इन्होंने सभी धर्मो के अनुयायियों को प्रेम और भाईचारे की शिक्षा दी। वे अपनी सादगी तथा उच्च आचरण से सभी को प्रभावित करते थे। इस मत में पीर की मजार पर जाकर उसकी उपासना करने का प्रचलन है जिसे **'जियारत'** करना कहते है।[10]

मालानी क्षेत्र सूफी सन्तों के प्रभाव में रहा है तथा यहां पर अनेक हिन्दू सूफी सन्त हुए हैं जो कि इस क्षेत्र की अपनी विशिष्ट पहचान है।[11]

ये सन्त आम आदमी के साथ उसी की तरह रहकर उसके कष्टों को दूर करना श्रेयस्कर मानते थे। इन्होंने ज्ञान से ओत–प्रोत वाणियों द्वारा शनैः–शनैः जनमानस में स्थान बना लिया तथा भारतीय निर्गुण सन्त परम्परा को अत्यधिक प्रभावित किया। यहां पर सूफी सम्प्रदाय के रोहल पंथ एवं शेख फरीद पंथ का अत्यधिक प्रभाव रहा है,[12]

जिसमें सदारामजी साहेब विख्यात सन्त हुए हैं–

सदाराम जी –

सादुल की अरजी सुनो, दाता दीनदयाल ।
ग्रह्यो जो चरण गुरु आपको, पावो प्रेम पियाल।।[13]

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

मालानी की धरा को यहां के सूफी सन्तों ने अपने भक्ति रस तथा तपोबल से पवित्र एवं पावन बनाया है। इनमें सबसे प्रमुख सन्त श्री सदाराम जी महाराज है। ये अपने भक्तों में **'सादुल साहेब'** के नाम से विख्यात है।[14]

इनका जन्म 1805 ई0 में बाडमेर नगर से उत्तर पूर्व दिशा में 120 किलोमीटर दूर स्थित गुहड़ा ग्राम में हुआ था।[15]

इस सम्बन्ध में छप्पय द्रष्टव्य है–

संवत अठारै सौ, वर्शस तेष्ठौ सुवते।
मास चैत के एसहु बीज उजरते।।
जियार्ण जोपित, मातु कुख इतु मंझार।
सादुल साहेब संत, अवनि लिए अवतार।।[16]

उनकी जन्मभूमि की प्रंशसा में निम्न दोहा प्रसिद्ध हैं–

धन भूमि धन ग्राम सौ, धन माता धन तात।

धन सत्गुरु धन शिष्य सौ, धन धन हरदम ध्यात।१।।

धन धन गूड़ा ग्राम धन, मन्दिर धन महाराज।

धन धन करनू रामजी, किये सुकत सब काज।।२।।[17]

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सदाराम जी बचपन में ही ज्ञान की खोज में घर से निकल गये तथा बाखरानी ग्राम के श्री सेवाराम जी से गुरु ज्ञान लिया।[17] युवा होने पर आपके माता–पिता ने आपका विवाह कर दिया लेकिन 6 माह पश्चात ही आपकी पत्नी का निधन हो गया। जिसके कारण आपके मन में संसार से विरक्ति का भाव आ गया एवं आप योग साधना के लिए मुल्तान चले गये एवं वहां पर छः माह तक योग साधना की।[18]

इसके उपरान्त आपने कोटमिठण, मीरपुरमथौले, जलवारे, कंढड़ी (सभी सिन्ध–पाकिस्तान) जगहों पर घोर तपस्या की। इसके पश्चात आप मीरापुर झोकशरीफ आ गये। यहां पर आपने छः वर्ष तक कठोर तपस्या की तथा सूफी सम्प्रदाय के रोहल पंथ से जुड़ गये। रोहल पंथ में दीक्षित होकर आप पुनः गुहड़ा आ गये एवं वहां पर अपना स्थान बनाया।[19]

इसके उपरान्त आप देशाटन पर निकल पडे। निरन्तर देशाटन करते हुए जैसलमेर एवं मालानी क्षेत्र के हर गांव एवं कस्बे की आपने यात्रा की तथा आमजन में ईश्वरीय प्रेम के उपदेश दिये।

जैसलमेर शासक के संरक्षक केसरसिंह ने आपको अपना गुरु धारण किया।

इस सम्बन्ध में सोरठा द्रष्टव्य है–

नृप खोले निज नैन। देखे सूरत दोय सम।

अनहद सुख एन। कारज मेरी कीजिए।।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

जब नृप कर दो जौर। पडयौ चरण बहु प्रेम तै।

अवरन तुम सम और। कर धर कृपा कीजिए।।[20]

सदाराम जी ने अनेक दोहे, सवैयों, छन्दों एवं भजनों की रचना की गई, उनके द्वारा रचित ग्रंथों की जानकारी निम्न चौपाई से मिलती हैं–

संवत गुणी से पांचों सोई। समज सागर उचारसु होई।

पांचे में सौ पूरण कीना। सहंस बसु मुनि सौदो दीना।१।

उगनी से उगणो से मांही। ज्ञान दीप उचार करांही।

बीसे में इति वही करावन। सहंस दौसत दो एकावन।२।

उगणो से उगणी से ऐसे, निर्माण सागर आरम्भ तैसे।

सम्पूर्ण कर है सतावीस। सहंस दो सत दौलत अष्टावीस।३।

उगनीसौ सतावीस आये। ज्ञान सागर ग्रंथ ग्रहाये।

उगनीसे गणतीस पूरा बन। सहंस दो दौलत एकावन।४।

राम सागर गीता में बानी। सात सौ चतुर्दस जानी।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सीख सहंदु एक सौ बेताली। राग रागिनी अधिक रसाली।५।

सादुल गीता बानी सतान। साल दौलत सतौर बाण।

सहस दो दो सौ ऊपर ते। मूल दीप है आदरू अन्ते।६।

इसके समुंद्र पंत संत ऐसे। गजल सिन्धी में गाये जैसे।

सादुल साहेब के ग्रन्थन की। कही सूची पत्र कथन की।७।[21]

उनकी कीर्ति में रचित निम्न दोहा द्रष्टव्य है।

ऐसा अवरण अवलिया, पाय न ऐसा पीर।
सिद्ध न ऐसा सूरमा, सादुल सुख की सीर।।
सगुण रूप धर सन्त को, निरगुण नामन रूप।
आये जीव उधारणे, अनहद ब्रह्म अरूप ।।[22]

उनकी महिमा में दोहे के रूप मे मंगलाचरण की रचना की गई हैं–

गणपत सादर ज्ञान दे, बालक बुद्धि बधार।
कहूं जीवन सादूल के, अद्‌भूत चरित्र अपार ।१।

नमो नमो अगुणो, सत चित स्वयं प्रकाश।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

मेरे शुभ कारज महीं, विधून हु करै विनाश ।२।

सुबुद्धि मन सादुल धौ, विवके ज्ञान विचार।

जीवन चरित्र सुनिज कहूं, अनहद दियो उचार।३।

जीवन भर में जो किये, चरित्र सु चमत्कार।

पढ़े सुने जो प्रेम से, सादुल काज सुधार।४।[23]

ऐसे महान सूफी सन्त ने सन् 1868 ई0 में इस मृत्युलोक से प्रयाण किया। इस सम्बन्ध में छप्पय द्रष्टव्य है–

उगणी सौ छबीस, शुक्ल चतुर्थी मधु मास।

वार ब्रहस्त शुभ, ते कृतक दिन तास।।

जोग प्रीत जब जान, पवन काल है प्रात।

रविरथ उतर मांहि, दिन देवन के साथ।।

सादुल मिल मुक्त विदेह में आतम ब्रह्म अभेद।

दामोदर तेही वन्दन कर नेति–२ की वेद हैं।।१।।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

चैत सुदी तिथ चौथ, भरिजै मैलो भारी।

लाखों आवे लोग, नमै सिर बहु नर नारी।।

भूप चढ़ावे भैंट, जारथ करैं कर जोरै।

रुपयों की बहैं रास, धजा फरू के सन धोरै।।

मेले में मिल मंगल महा, संत समागम बहै सदा।

दरशन सतगुरु सादुल को, सो सरधालू जन सुखदा।२।

संवत औगणी सौ सार, वरष छबीस सौ बजे।

चैत मास सुद चैत, चौथ मति दिन चजै।।

बृहस्पतवार वदीत, नक्षत्र कृतका निरमल।

जोग प्रीत दिन जाय, परभाते दिन परमल।।

सादुल सतगुरु संत, आप ब्रह्म कुल में आयौ।

शिष्यजन अनत सुधार, सधरे संत लोकसिधाये।।

कुंभदास शिष्य यह कहत, ज्ञान उदय जब गात हैं।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सादुल सतगुरु की शरण, जहां कछु आत न जात है।३।[24]

सदाराम जी ने अपनी योग साधना तथा दिव्य ज्ञान से सम्पूर्ण सिन्ध, राजस्थान के साथ–साथ, गुजरात, महाराष्ट्र, छतीसगढ राज्यों में प्रसिद्धि पाई। संत सहजोबाई ने भजन के रूप में संतसदाराम जी की महिमा गाई हैं –

रामैईयें ना भूलो मत साइल सुख री सीर।

सादुल साहब जोगी अनादि सुर गुण हरयो शरीर।

नैन बैन अमृत बाणी ऐसे आप अमीर।।१।।

सत पुरुष री संगत साची अणभे गंग नीर।

अनत सन्त आगे ओधारया तार दिया भव तीर।।२।।

सत्संग मों सोहो साचो ऐसो ज्ञान गम्भीर।

मानक मोती पारस मणि सेहजे पायो हीर।।३।।

करनूरामजी स्वरूप सादुल ही धन भड़ो तक हीर।

सत चित आणद पार ब्रह्म हैं, पाई अमृत जागीर।।४।।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

रामैईये ना भूलो मत सादुल सुख री सीर।

रामैईये ना भूलो मत सादुल सुख री सीर।।५।।[25]

आज भी उनके समाधि–स्थल के साथ–साथ सिन्ध, बाडमेर नगर में स्थित उनके पूजा–स्थल पर चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विशाल मेला लगता है।[25] जिसमें सम्पूर्ण भारत वर्ष से हजारों की तादाद में भक्तजनों का सैलाब उमड़ पडता है।

संदर्भ

1. रामप्रसाद दाधिच, राजस्थानी सन्त परम्परा, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर, पृ.73
2. ए.एल. श्रीवास्तव, **मध्यकालीन भारतीय संस्कृति**, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा, पृ.61
3. वही, पृ.61
4. गोपीनाथशर्मा, **राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास**, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा, पृ.219
5. रामप्रसाद दाधिच, **पूर्वोक्त**, पृ.74
6. वही, पृ.75
7. ए.एल. श्रीवास्तव, **पूर्वोक्त,** पृ.62

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

8. वही, पृ.63
9. वही, पृ.63
10. रामप्रसाद दाधिच, **पूर्वोक्त**, पृ.76
11. द्रष्टव्य **मरूमंजरी**, वर्ष 6, अंक 6, 1987, पृ.30
12. वही, पृ.59
13. मोटूराम, **श्री सदाराम महाराज जीवन दशर्न**, सार्दुल प्रकाशन, बाड़मेर, पृ.04
14. वही पृ.03
15. भेंटवार्ता **उकाराम वणल** से, बाड़मेर, दि0 12.11.2008
16. मोटूराम, पूर्वोक्त, पृ. 03
17. मोटूराम, **पूर्वोक्त**, पृ.17
18. उकाराम वणल से बाड़मेर दिनांक– 12.11.2008
19. उकाराम वणल से भेंटवार्ता

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

20. मोटूराम, **पूर्वोक्त**, पृ. 01
21. **राजस्थान पत्रिका, जोधपुर संस्करण**, दि0 21.03.2018
22. मोटूराम, **पूर्वोक्त,** पृ.08
23. वही, पृ.02
24. भेंटवार्ता **उकाराम वणल** से, बाड़मेर, दि0 12.11.2008
25. **राजस्थान पत्रिका, जोधपुर संस्करण**, दि0 21.03.2018